अध्याय 20

सोपर का दूसरा भाषण

अय्यूब की अंतिम चेतावनी के अर्थों से सोपर का अपमान हुआ (19:28, 29)। उसने उत्तर दिया कि दुष्टों की विजय थोड़ी देर की है (20:1–11); बुराई स्वादिष्ट हो सकती है पर यह ज़हरीली भी है (20:12–19); और अंत में, दुष्टता का भेद खुल ही जाता है (20:20–29)।

''दुष्ट की विजय थोड़ी देर की है'' (20:1–11)

[1]तब नामाती सोपर ने कहा, [2]''मेरा जी चाहता है कि उत्तर दूँ, और इसलिये बोलने में फुर्ती करता हूँ। [3]मैं ने ऐसी चितौनी सुनी जिस से मेरी निन्दा हुई, और मेरी आत्मा अपनी समझ के अनुसार तुझे उत्तर देती है। [4]क्या तू यह नियम नहीं जानता जो प्राचीन और उस समय का है, जब मनुष्य पृथ्वी पर बसाया गया, [5]कि दुष्टों का ताली बजाना जल्दी बन्द हो जाता और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का होता है? [6]चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश तक पहुँच जाए, और उसका सिर बादलों तक पहुँचे, [7]तौभी वह अपनी विष्ठा के समान सदा के लिये नष्ट हो जाएगा; और जो उसको देखते थे वे पूछेंगे कि वह कहाँ रहा? [8]वह स्वप्न के समान लोप हो जाएगा और किसी को फिर न मिलेगा; रात में देखे हुए रूप के समान वह रहने न पाएगा। [9]जिसने उसको देखा हो फिर उसे न देखेगा, और अपने स्थान पर उसका कुछ पता न रहेगा। [10]उसके बाल-बच्चे कंगालों से भी विनती करेंगे, और वह अपने ही हाथों से अपना माल लौटा देगा। [11]उसकी हड्डियों में जवानी का बल भरा हुआ है परन्तु वह उसी के साथ मिट्टी में मिल जाएगा।''

आयतें 1, 2. अय्यूब की बातों से **सोपर** का **जी** उत्तेजित हुआ और वह बैचेन हो गया (देखें 4:13)। जिस कारण सोपर ने **फुर्ती** ने **अय्यूब** को उत्तर देने को विवश किया।

आयत 3. ''मैं ने ऐसी चितौनी सुनी जिस से मेरी निन्दा हुई।'' ''चितौनी'' (*musar, मूसर*) शब्द का इस्तेमाल एलीपज द्वारा अपने पहले भाषण में किया गया था, जहां इसका अनुवाद ''ताड़ना'' हुआ है (5:17)। बाद में एलीहू ने अपने भाषणों में इसका अनुवाद किया जहां इसका अनुवाद ''शिक्षा'' किया गया है (33:16; 36:10)। एच. एच. रोअले ने बताया है, ''शब्द का अर्थ आम तौर पर 'सुधार,' 'ताड़ना' (तुलना यशायाह 53.5) है। जब सुधार बातों के द्वारा होता है तो यह 'फटकार' कहलाता है।''[1] जिस प्रकार से अय्यूब को अपने मित्रों की बातों से लगा कि उसकी ''निंदा'' हुई है (19:3), वैसे ही सोपर ने अय्यूब की बातों का अर्थ ''निंदा'' के रूप में लिया।

आयतें 4, 5. इन आयतों के साथ सोपर द्वारा दुष्टों की क्षणिक, थोड़ी देर की सफलता का स्पष्ट विवरण आरम्भ होता है (20:4–11)। यह विवरण आवश्यक रूप में मित्रों के धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण को दोबारा से कहा जाना है, जिसे ''दण्ड देने वाला न्याय'' कहा जाता है। यह विचार

इस प्रकार से है कि दुष्टों को उनकी दुष्टता के लिए इसी जीवन में दण्ड मिल जाता है जबकि धर्मियों को आशीष मिलती है।

सोपर ने अय्यूब से एक अलंकारिक प्रश्न पूछा जो पुरानी परम्परा की ओर ध्यान दिलाने के लिए था (देखें व्यवस्थाविवरण 4:32)। जॉन ई. हार्टले ने समझाया है, ''प्रश्न की बनावट यह संकेत देती है कि यदि अय्यूब उत्तर देने से इनकार करता तो उसने एक अर्थ में यह कह रहे होना था कि वह ज्ञानियों की प्राचीनतम, सबसे सम्मानित शिक्षा को नकारता है।''[2] सोपर के अनुसार यह नियम कि **दुष्टों का ताली बजाना बंद हो जाता है** उतना ही **प्राचीन** था जितना **मनुष्य का पृथ्वी पर बसाया** जाना।

आयतें 6, 7. माहात्मय शब्द ''घमण्ड''[3] का प्रतीकात्मक शब्द है (NIV; NLT), और **आकाश तक पहुंच**ने का विचार परमेश्वर का सबसे अधिक अनादर है (उत्पत्ति 11:4; यशायाह 14:13, 14)। दुष्ट व्यक्ति कुछ देर के लिए चाहे बलवंत हो जाता है पर अंत में वह अपनी ही **विष्ठा** (*gel, जेल*) या ''मल'' (KJV; NIV; NRSV) जैसा बनकर **नष्ट हो** जाता है। मनुष्य के मल की तरह दुष्ट मनुष्य ''मिट्टी में लौट जाता है और इस प्रकार से वह अलोप हो जाता है।''[4]

आयत 8. दुष्ट व्यक्ति **स्वप्न के समान** (भजन संहिता 73:20) या **रात में देखे हुए रूप के समान** आलोप हो जाता है। हार्टले ने लिखा है, ''जैसे सुबह की रौशनी रात के अंधेरे का पीछा करती है, वैसे ही समाज बहुत जल्द इस दुष्ट को अपने सारे स्मरण से मिटा डालेगा।''[5]

आयत 9. ''जिसने उसको देखा हो फिर उसे न देखेगा, और अपने स्थान पर उसका कुछ पता न रहेगा।'' सोपर की यह भाषा अय्यूब को पहले कहे गए शब्दों को याद दिलाने वाली है (7:8, 10)। NLT में आयत 9 का अनुवाद है: ''न तो उसके मित्र और न ही उसके परिवार के लोग उसे कभी दोबारा देख पाएंगे।'' दुष्ट के चला जाने पर कोई उसे याद नहीं करना चाहता।

आयत 10. दुष्ट आदमी के कृत्य उसके परिवार पर नकारात्मक असर डालते हैं। **उसके बाल बच्चे** समृद्ध विरासत नहीं पाते बल्कि उनका जीवन भिखारियों जैसा होता है। उन्हें **कंगालों** ''का समर्थन मांगना'' (ASV) या ''से भीख मांगना'' (NLT) पड़ेगा। एक और विकल्प यह है कि वे बाल बच्चे या तो कंगालों को ''लौटा दें'' (NJB) या फिर ''प्रायश्चित करें'' (NIV)।

आयत 11. उसकी हड्डियों दुष्ट व्यक्ति के शरीर को कहा गया है; यह एक अंगांगिवाचन अर्थात अलंकार है जिसमें एक भाग पूर्ण को दर्शा रहा होता है। यह दुष्ट समय से पहले, अर्थात जवानी में मर जाएगा। कब्र में उसकी **जवानी का बल** उसके किसी काम नहीं आएगा।

''बुराई मीठी पर ज़हरीली है'' (20:12-19)

[12]''चाहे बुराई उसको मीठी लगे, और वह उसे अपनी जीभ के नीचे छिपा रखे, [13]और वह उसे बचा रखे और न छोड़े, वरन् उसे अपने तालू के बीच दबा रखे, [14]तौभी उसका भोजन उसके पेट में पलटेगा, वह उसके अन्दर नाग का सा विष बन जाएगा। [15]उसने जो धन निगल लिया है उसे वह फिर उगल देगा; परमेश्वर उसे उसके पेट में से निकाल देगा। [16]वह नागों का विष चूस लेगा, वह करैत के डसने से मर जाएगा। [17]वह नदियों अर्थात् मधु

और दही की नदियों को देखने न पाएगा। [18]जिसके लिये उसने परिश्रम किया, उसको उसे लौटा देना पड़ेगा, और वह उसे निगलने न पाएगा; उसकी मोल ली हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना चाहिये, उतना उसे न मिलेगा। [19]क्योंकि उसने कंगालों को पीसकर छोड़ दिया, उसने घर को छीन लिया, उसको वह बढ़ाने न पाएगा।''

आयतें 12-14. रॉबर्ट एल. आल्डन ने कहा है, ''आयतें 12-13 तीन आयत वाले नर्म वाक्य का पहला आधा भाग हैं जो आयत 14 के परिणाम के साथ समाप्त होता है।''[6] दुष्ट व्यक्ति को वह बुराई जो वह करता है **मीठी** लगती है पर समय के साथ वह **उसके अंदर नाग का सा विष बन** जाती है।

आयत 15. दुष्ट मनुष्य **धन** जमा करता है पर वह अपने नाजायज़ कामों के फलों का आनन्द नहीं ले पाएगा। परमेश्वर के हस्तक्षेप करने के कारण उसकी सम्पत्ति ही उसकी बर्बादी का कारण बन जाएगी।

आयत 16. ''**वह नागों का विष चूस लेगा, वह करैत के डसने से मर जाएगा।**'' दुष्ट मनुष्य के सम्बन्ध में, हार्टले ने टिप्पणी की है, ''वह अनुचित लाभ में मस्त रहता है। उसके मन में किसी को चकमा देकर और धन इकट्ठा करने की योजनाएं बनती रहती हैं। पर वह अपनी ही चालाकी में फंस जाता है। जिस सांप के साथ खेलना उसे अच्छा लगता है वही उसे डस लेता है।''[7]

आयत 17. दुष्ट मनुष्य जीवन की आशिषों को पाकर उनका आनन्द नहीं ले पाएगा। ''दूध और मधु की धाराएं'' वाक्यांश से मिलता जुलता होने के कारण **मधु और दही की नदियों** बहुतायत में होने को दर्शाता है (निर्गमन 3:8, 17; 13:5)। ''दहीं'' दूध को जमाकर बनाए गए खाद्य पदार्थ को कहा गया है।

आयत 18. फिर से, आदमी अपनी जमा की हुई दौलत को **लौटा** देता है (देखें 20:10)। **जिसके लिए उसने परिश्रम किया** (*yaga', यगा*) कठिन परिश्रम से प्राप्त फल के लिए कहा गया है।[8] **मोल ली** (*th^{e}murah, थेमुरा*) सौदा करके कमाई गई दौलत को दर्शाता है।[9]

आयत 19. कंगालों (*dallim, डलिम*) के साथ शालीनतापूर्वक व्यवहार करना आवश्यक था। बुद्धिमान ने कहा है, ''जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है'' (नीतिवचन 14:31); और ''जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा'' (नीतिवचन 19:17)। आमोस नबी ने सामरिया की स्त्रियों को कंगालों का दमन करने के लिए दोषी ठहराया था (आमोस 4:1)। होमेर हेली ने कहा, ''परोक्ष रूप में सोपर का आरोप यह था कि अय्यूब ने कंगालों की परवाह नहीं की थी बल्कि उसने उनके खेतों या उनके घरों को लूटा था, पर उन्हें उस लूट के माल से लाभ नहीं हुआ था।''[10]

''दुष्टों को परमेश्वर की ओर से उसका भाग मिलेगा?'' (20:20-29)

[20]''लालसा के मारे उसको कभी शान्ति नहीं मिलती थी, इसलिये वह अपनी कोई

मनभावनी वस्तु बचा न सकेगा। [21]कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए न बचती थी; इसलिये उसका कुशल बना न रहेगा। [22]पूरी सम्पत्ति रहते हुए भी वह सकेती में पड़ेगा; तब सब दु:खियों के हाथ उस पर उठेंगे। [23]ऐसा होगा कि उसका पेट भरने के लिये परमेश्वर अपना क्रोध उस पर भड़काएगा, और रोटी खाने के समय वह उस पर पड़ेगा। [24]वह लोहे के हथियार से भागेगा, और पीतल के धनुष से मारा जाएगा। [25]वह उस तीर को खींचकर अपने पेट से निकालेगा, उसकी चमकीली नोंक उसके पित्ते से होकर निकलेगी, भय उसमें समाएगा। [26]उसके गड़े हुए धन पर घोर अन्धकार छा जाएगा वह ऐसी आग से भस्म होगा, जो मनुष्य की फूँकी हुई न हो; और उसी से उसके डेरे में जो बचा हो वह भी भस्म हो जाएगा। [27]आकाश उसका अधर्म प्रगट करेगा, और पृथ्वी उसके विरुद्ध खड़ी होगी। [28]उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी, वह परमेश्वर के क्रोध के दिन बह जाएगी। [29]परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंश, और उसके लिये परमेश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है।''

सोपर ने किसी पापी के परिणामों की स्पष्ट बात तो कह दी पर उसने इन परिणामों के व्यक्ति के *सांसारिक* जीवन तक सीमित करके गलती की। हेली ने लिखा है:

> सोपर इच्छाओं को, सम्पत्ति जमा करने और हानियों को पूरी तरह से शारीरिक और भौतिक दृष्टिकोण से देखता है। आत्मिक महत्व वाली कोई भी बात बिल्कुल उसके दिमाग में आती हुई नहीं लगती। वह हर युग के भौतिकवादी परम्परावादी का प्रतीक था।[11]

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने इसमें जोड़ा है:

> सोपर के विश्वासों की संकीर्णता के चिह्न के रूप में यह ध्यान दिलाना अच्छा है कि उसके भाषण में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि दुष्ट व्यक्ति मन फिरा सकता है, पश्चात्ताप कर सकता है और फिर से परमेश्वर का समर्थन पा सकता है। सोपर में कोई करुणा नहीं है और उसके देवी/देवता में कोई दया नहीं है। ... और सोपर उस दुष्ट के जितना ही भौतिकवादी है जिसकी वह निंदा करता है। वह ''सम्पत्ति'' के खो जाने को न्याय के रूप में देखता है (आयत 28)। परमेश्वर के साथ संगति का खोना, इस जीवन में और इसके बाद, उसे सबसे बुरी चोट नहीं लगता। परन्तु संक्षेप में कहें तो अय्यूब के मन में इसी खोने के डर ने खौफ़ भर दिया और इस कमी ने उसे इतनी बुरी तरह से बेकरार कर दिया।[12]

आयतें 20-23. सोपर ने दुष्टता के प्रभावों का वर्णन करने के लिए बदहज़मी के शब्दों का इस्तेमाल किया। दुष्ट को कोई संतुष्टि नहीं है यानी उसके पेट को **कभी शांति नहीं मिलती**। वह अपना पेट दूसरों की सम्पत्ति से यहां तक भर लेता है कि **कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए** नहीं **बचती**। **पूरी सम्पत्ति** होने के बावजूद दुष्ट मनुष्य **सकेती में पड़ेगा**। उसकी चालों से **दु:खी** होने वाले सब लोग उस पर हमला करेंगे। इस आदमी का **पेट** चाहे भरा है पर **परमेश्वर** भी **अपना क्रोध उस पर भड़काएगा**। अंत में दुष्ट मनुष्य का **कुशल बना न रहेगा**।

निश्चय ही इन बातों में सच्चाई है। हेली ने टिप्पणी की है:

> लोगों और देशों का अनुभव इस नियम की सच्चाई की पुष्टि करता है। विलासतापूर्ण जीना, केवल शरीर और इसकी लालसाओं की पूर्ति की चिंता करना और भौतिक सम्पत्ति के लालच से प्रेरित रहने वाला व्यक्ति अंत में अपनी ख़ुशहाली को खत्म होते ही देखेगा।[13]

परन्तु सोपर ने इन नियमों को अय्यूब के ऊपर लागू करके गलती की।

आयतें 24, 25. दुष्ट व्यक्ति एक हथियार से चाहे बच जाए पर कोई दूसरा हथियार उसे बुरी तरह से घायल कर देगा। **हथियार** (*nesheq, नेशेक़*) शब्द सामान्य है और हो सकता है कि यह तलवार या भाले के लिए कहा गया हो। **धनुष** लकड़ी के बनाए जाते थे, न कि **पीतल** के, क्योंकि ''पीतल का धनुष'' इस बात का प्रतीक था कि उसे मोड़ा नहीं जा सकता (2 शमूएल 22:35; भजन संहिता 18:34)। यहां पर ''धनुष'' (*qesheth, .क़ेशेथ*) सम्भवतया तीर की जगह है (NIV; NRSV)। आल्डन ने लिखा है, ''पूरे प्राचीन निकट पूर्व में पीतल के तीर आम मिल जाते हैं।''[14]

परमेश्वर अपने धनुष से तीर इतने ज़ोर से छोड़ता है कि यह दुष्ट मनुष्य के अंदर पूरा घुस जाता है जिससे तीर की **चमकीली नोंक** उसके **पेट से** आगे जाती है। सोपर की भाषा अय्यूब की पहले कही गई बात से मेल खाती थी: ''उसके तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे हैं, वह निर्दयी होकर मेरे गुर्दों को बेधता है, और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है'' (16:13)। इन रूपकों का इस्तेमाल करते हुए सोपर ने बड़ी सूक्ष्मता से अय्यूब को दुष्ट जन के साथ मिला दिया।

आयतें 26-28. दुष्ट जन पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। **उसके गड़े हुए धन, उसके डेरे में जो बचा हो, उसके घर की बढ़ती और उसकी सारी सम्पत्ति, परमेश्वर के क्रोध के दिन** भस्म हो जाएंगे। हमारे प्रभु ने कहा,

> अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा (मत्ती 6:19-21)।

दुष्ट जन की हुई बुराइयों की पुष्टि करते हुए **आकाश** और **पृथ्वी** उसके विरुद्ध गवाही देंगे। हार्टले ने समझाया है, ''थ्यौरी यह है कि कोई भी क्यों न हो, वह कभी भी कोई काम पूरी तरह से गुप्त में नहीं करता। प्रकृति के तत्व उसके हर कार्य को देखते हैं और जब परमेश्वर अदालत लगाएगा तो वे उसे दोषी ठहराने के लिए उसके विरुद्ध गवाही देंगे।''[15]

आयत 29. अंश (*cheleq, चेले.क़*) शब्द किसी को मिलने वाले भाग का संकेत देता है, चाहे वह भोजन हो, भूमि, विरासत या युद्ध की लूट का माल। यहां पर बुराई करने वाले का दण्ड उसका ''अंश'' है (देखें 27:13; यशायाह 17:14)।

सोपर की अधिकतर बातें सच्ची हैं। परन्तु यदि वह यह कह रहा था कि ये बातें इसी जीवन में पूरी होती हैं तो उसने अपनी बात को बढ़ा चढ़ाकर कहा। उसके दिमाग में अय्यूब था, इसलिए वे बातें गलत थीं, क्योंकि वे उस पर लागू नहीं होती थीं।

प्रासंगिकता

सम्बन्धों को बढ़ावा देना (अध्याय 20)

एक बार सुकरात के पास एक जवान उससे यह कहने आया कि वह उसे भाषण कला सिखा दे। अपने निवेदन के बाद वह बिना रुके तब तक बोलता रहा, जब तक अंत में सुकरात ने उसके मुंह पर हाथ रखकर यह नहीं कहा, ''जवान, मैं तुझ से दोगुनी फीस लूंगा।'' जब उस जवान ने इसका कारण पूछा, तो सुकरात ने कहा, ''मुझे तुम्हें दो विज्ञान सिखाने पड़ेंगे। पहला यह कि अपनी जीभ को कैसे रोकना है और दूसरा यह कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है।''[16]

हमारे सम्बन्धों में बढ़ावा मिलेगा यदि हम उन नियमों को अपनाकर व्यवहार में लाएं जो हमारे प्रभु के भाई ने बताए जब उसने कहा, ''हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो'' (याकूब 1:19)। मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछता हूं। (1) आप सुनने के अपने कौशल को कितने नम्बर देंगे? क्या आप ''सुनने के लिए तत्पर'' हैं? (2) बोलने से पहले विचार करने के अपने कौशल को आप कितने नम्बर देंगे? क्या आप ''बोलने में धीर'' हैं? (3) ''क्रोध करने में धीमा'' होने के लिए आप अपने आपको कितने नम्बर देंगे? अपने मित्रों और अपने परिवार के लोगों के साथ पेश आते हुए क्या आप ''सुनने के लिए तत्पर, बोलने में धीर और क्रोध में धीमा होते हैं?'' किसी को जो आप से अलग दृष्टिकोण रखता हो, जवाब देते हुए आप ''सुनने के लिए तत्पर'' और ''क्रोध में धीमा'' होते हैं? हम सब एक दूसरे के बहुत निकट आ जाएंगे, अगर हम में से हर कोई इन तीन नियमों को मानने लगे।

सोपर के दो भाषणों को पढ़ने के बाद (एक अय्यूब 11 में दर्ज है और दूसरा अध्याय 20 में) यह स्पष्ट है कि वह सुनने में तत्पर, बोलने में धीर, और क्रोध में धीमा नहीं था। उसके भाषणों को पढ़ने के बाद हमें पता चलता है कि वह उपयोगी संचारक (बातचीत करने वाला) या समझदार, परवाह करने वाला और तसल्ली देने वाला मित्र नहीं था क्योंकि उसे यह मालूम नहीं था कि अपनी जीभ का इस्तेमाल कैसे करना है। सोपर ''ऐसा मित्र'' नहीं था ''जो भाई से भी अधिक मिला रहता है'' (नीतिवचन 18:24), न ही उसने अय्यूब का बोझ उठाया जैसा कि गलातियों 6:2 हमें उठाने को कहता है। सोपर का दूसरा भाषण पढ़ने के बाद हमें पता चलता है कि अय्यूब के साथ उसका सम्बन्ध खराब हो गया था।

सावधानी से बातचीत आवश्यक है। मसीहियत सम्बन्धों से ही है और मैं हमेशा परमेश्वर के साथ, अपने परिवार के साथ, अपने भाइयों के साथ, अपने मित्रों के साथ और खोए हुओं के साथ सम्बन्धों को सुधारने में ही लगा रहता हूं। एक प्रचारक के रूप में मैं एक उपयोगी संचारक बनना चाहता हूं जो लोगों को प्रोत्साहित कर सके और उन्हें आशा दे सके। एक प्रचारक के रूप में जिसे आम तौर पर दुःखी, परेशान लोगों से बात करने को कहा जाता है, मैं सावधानी से बातचीत करने वाला भी बनना चाहता हूं। मैं अपने मित्रों को यह दिखाना चाहता हूं कि मैं परवाह करने वाला व्यक्ति हूं, और मैं अपने सम्बन्धों को और गहराई तक बढ़ाना चाहता हूं। हमारी हर टिप्पणी से या तो हमारे सम्बन्धों को आशीष मिलती है या हमारे सम्बन्धों को नुक्सान होता है। बोलने से पहले हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि हमें क्या कहना है और कैसे कहना है। यदि हमें सचमुच में अपने सम्बन्धों की परवाह है तो हम अपने विचारों के साथ स्पष्ट और

ईमानदार होंगे, पर ''प्रेम में सच्चाई से चलते हुए'' (इफिसियों 4:15)। सनसनीखेज सुनने वाले बनकर जो कुछ हमने सुना है, हम उसे स्पष्ट करने वाले बनना सीखेंगे। हम कभी भी किसी को नीचा दिखाने या अपमानित करने वालों के साथ नहीं मिलेंगे।

अय्यूब 20 में, सोपर ने इनमें से कई नियमों को तोड़ा। उसकी बातें परवाह करने वाली और तसल्ली देने वाली नहीं थीं। वास्तव में सोपर ने माना कि वह अय्यूब द्वारा पहले उसे बताए गए उसके विचारों के कारण मन ही मन उत्तेजित (20:2) और अपमानित (20:3) महसूस कर रहा था। सोपर ने अय्यूब के विचारों को ढालकर और ''सुनने में तत्पर, बोलने में धीर, और क्रोध करने में धीमा'' होने के बजाय अय्यूब को सीधा करने की कोशिश की। क्योंकि सोपर अय्यूब के दावों से सहमत नहीं था इसलिए सोपर को अय्यूब की बात पर उसे समझने वाले कान से सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं लगी। वास्तव में सोपर की दिलचस्पी अय्यूब को भाषण देने में अधिक लगी। सोपर आरोप लगाने वाला और उत्तेजित था इसलिए उसके भाषण में अय्यूब के साथ उसके सम्बन्ध को खराब करने की क्षमता थी।

हमारी बातें समझदारी और समझ से भरी हुई हों। 20:3 में सोपर ने ''समझ की अपनी आत्मा'' की बात की, पर उसे यह समझ नहीं थी कि अदृश्य संसार में क्या हुआ है। इसके अलावा सोपर ने अपने मित्र अय्यूब को समझने की इच्छा नहीं की। सोपर को लगा कि उसके पास हर सवाल का जवाब है; उसे लगा कि उसे सब मालूम है कि परमेश्वर इस संसार में किस प्रकार से काम करता है। सोपर का मानना था कि परमेश्वर निर्दोष लोगों पर बुरी बातें नहीं होने देता। इसलिए सोपर ने इस सम्भावना को मानना नहीं था कि कोई और व्याख्या हो सकती है। अय्यूब अभी भी निष्कलंक होने का दावा कर रहा था इसलिए सोपर ने उसे अपनी बात समझाने की और कोशिश करनी चाही। इसी लिए सोपर ने अय्यूब को दुष्टों के ऊपर यह भाषण दे डाला। सोपर ''दुष्टों'' के बारे में और बहुत कुछ बोल सकता था (20:4-29), पर इसका अर्थ यह नहीं था कि बोलने से वह समझदार हो गया हो।

हमारी जीभों के इस्तेमाल पर टिप्पणी करते हुए, याकूब ने लिखा, ''तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है'' (याकूब 3:13)। सुलैमान ने चौकस किया कि हमारी बातें और हमारे काम बुद्धि और समझ से भरे हुए हों (नीतिवचन 4:5, 7-9; 10:13, 14, 19-21; 11:12, 13; 12:18; 14:29)। प्रेम करने वाले मित्र होने के बजाय जो परवाह करने वाली बातें समझदारी से बोलता हो (जैसे, ''मुझे समझा कि तेरे साथ क्या हुआ''), सोपर अय्यूब को अपने दूसरे भाषण में अपमान करने वाला, दोष लगाने वाला, बेअदब, और बेरहम था। सोपर एक चलता-फिरता विचार था जिसे लगता था कि उसे सब कुछ पता है। याकूब 3:14, 15 ऐसे व्यक्ति का वर्णन ''घमण्डी'' व्यक्ति के रूप में करता है जिसमें याकूब ने कहा कि ऐसा ज्ञान ऊपर से नहीं है। असली ज्ञान को इस बात की समझ है कि और भी बहुत कुछ सीखना आवश्यक है।

हमारी बातें प्रेरणा देने वाली, उत्साह बढ़ाने वाली और आशा से भरी होनी चाहिए। परेशान लोगों से बात करते हुए हमें ऐसे मरहम लगाने वाले शब्दों और वाक्यांशों का इस्तेमाल करना आवश्यक है जिनसे लोगों को उम्मीद मिले। सोपर एक अच्छा मित्र हो सकता था यदि वह समझदारी से काम लेते हुए अय्यूब को कुछ इस प्रकार से कहता: ''अय्यूब, मैं कल्पना भी नहीं

सकता कि तुम किस परिस्थिति में से गुज़र रहे हो। समझ में नहीं आता कि तुम्हारे साथ ऐसा क्यों हुआ है। परन्तु दु:ख की इस घड़ी में मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और मैं हमेशा तुम्हारा दोस्त रहूंगा। मैं उस दिन की राह देख रहा हूं जब हमें इतनी तकलीफ नहीं होगी और उम्मीद करता हूं कि हम धीरे-धीरे करके और अच्छी तरह से समझ आ जाएंगी। अभी तो मैं तुम्हें इतना ही बताना चाहता हूं कि मैं तुम्हारे लिए परेशान हूं!'' सोपर के भाषण में ऐसा कुछ नहीं है। इसके बजाय यह दुष्टों के विनाश की बात करता है। सोपर ने बड़ी निर्ममता से अय्यूब को बताया कि ''परमेश्वर [ने] अपना क्रोध उस पर भड़का [ना था]'' और उसने परमेश्वर की ''आग से भस्म'' हो जाना था ''जो मनुष्य की फूंकी हुई न'' थी (20:23, 26)। यह प्रेरणादायक और प्रोत्साहित करने वाली बात नहीं थी और इससे अय्यूब को उम्मीद नहीं मिली। दुष्टों पर अपने इस भाषण को सोपर ने यह कहते हुए समाप्त किया कि उसके भाषण के नियम बिल्कुल सही हैं! ''परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का भाग यही है'' (20:29)।

वास्तविक ज्ञान इस बात को समझता है कि हमारे सम्बन्ध तब मज़बूत होते हैं जब हमारी बातें तसल्ली देने वाली, प्रोत्साहित करने वाली, प्रेरणा देने वाली और उत्साह बढ़ाने वाली होती हैं। यह कहावत सच है: ''लोगों को इस बात की परवाह नहीं होती कि तुम्हें कितना ज्ञान है जब तक उन्हें यह पता न हो कि तुम कितनी परवाह करते हो।''[17] सोपर को इस बात की समझ नहीं थी पर इसी कारण उसने अय्यूब की सेवा करने और अपने सम्बन्ध को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाने के अवसर को खो दिया।

एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1] एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 176. [2] जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 304. [3] फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 673. [4] विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 371. [5] हार्टले, 305. [6] रॉबर्ट एल. आल्डन, *जॉब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 215. [7] हार्टले, 306. [8] लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:386. [9] वहीं, 2:1747. [10] होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc, 1994), 183.

[11] वहीं। [12] फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 197. [13] हेली, 183. [14] आल्डन, 217. [15] हार्टले, 308. [16] स्पायरोस ज़ोडिएटस, द *बिहेवियर ऑफ़ बिलीफ़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 94. [17] यह बात जॉन सी. मैक्सवैल की कही मानी जाती है (http://thinkexist.com/quotation/people_do_not_care_how_much_you_know_until_they/346868.html; Internet; 22 October 2009 को देख गया)।